प्रथम अध्याय
यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों से पृथक् करके नहीं देखा जा सकता । क्यों कि, उसके विचार एवं भावनाएँ उसके जीवन की ही प्रतिच्छाया होती है । वह युग की परिस्थितियों एवं समाजगत भावनाओं से विमुख होकर साहित्य सृजन में सफल नहीं हो सकता । उसने किन परिस्थितियों और भावनाओं तथा विचारों से प्रेरित होकर साहित्य का सृजन किया है यह जानने के लिए उसके वास्तविक जीवन का यथार्थ परिचय आवश्यक है ।

यशपाल के जीवन के दो पक्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । पहला पक्ष है - क्रांतिकारी और दूसरा साहित्यिक । उनके व्यक्तित्व को उसकी समग्रता में समझने के लिए जीवन के विभिन्न पक्षों पर दृष्टिपात करना आवश्यक है ।

पारिवारिक पृष्ठभूमि -

हिंदी के विश्वविख्यात साहित्यिक एवं श्रेष्ठ क्रांतिकारी यशपाल का जन्म ३ दिसंबर १९०३ को फिरोजपुर छावनी में हुआ। वहाँ उनकी माता - प्रेमादेवी - एक अनाथालय में अध्यापिका थी। यशपाल के पूर्वज कांगडा जिले के निवासी थे। पिता हीरालाल जी हिमाचल में हमीरपुर के भुम्पल गाँव मेंरहते थे। " एक कच्चे मकान और दुकान के सिवा कोई विशेष संपत्ति उनके पास नहीं थी और वे सूद पर पैसा उधार दिया करते थे। "[१] गाववाले सम्मान के कारण उन्हें लाला कहकर पुकारते थें। पर साथ ही कंजूस मानते थें। पिता की यह स्थिति देखकर यशपाल को हीनता का एहसास होता था। हीरालाल जी ने प्रौढावस्था में शादी की थी और प्रेमादेवी अपने आपको शाम चौरासी के मंत्रियों के वंश से मानती थी। संभवत: यही कारण है कि प्रेमादेवी अलग से नौकरी करके रहने लगी। वह सहनशील परिश्रमी, एवं साहसी प्रवृत्ति की धार्मिक स्त्री थी। पति की मृत्यु के पश्चात् तो उनका कांगडा आना-जाना प्राय: समाप्त हो गया। धर्मपाल और यशपाल का पालन-पोषण प्रेमादेवी ने अपने संरक्षण में किया और आर्य समाज से प्रभावित होने के कारण यशपाल को दयानंद का सच्चा सैनिक बनाने के लिए गुरुकुल कांगडी में शिक्षित करने का निर्णय लिया।

गुरुकुल जीवन शिक्षा -

यशपाल की माँ सुसंस्कृत होने के कारण अपने बच्चों के भविष्य के प्रति पहले से ही सचेत थी। आर्य समाज के विचारों का प्रभाव उनपर होने के कारण वह अपने बेटे को आर्य धर्म का ब्रह्मचारी, प्रचारक बनाना चाहती थी। अपनी अपेक्षा की पूर्ति के लिए वह यशपाल को कांगडी के

गुरुकुल में भेजती है। वहाँ यशपाल ने सातवी कक्षा तक शिक्षा पायी। लेकिन इन सात सालों में वे वहाँ के वातावरण में दबे से रहे। वहाँ के वातावरण के प्रति उनके मन में घृणा उत्पन्न हुयी। अपने क्षोभ को प्रकट करते हुए यशपाल लिखते हैं - " सात वर्ष के वनवास के बाद लाहौर पहुँचने पर मैंने अपरिचित समाज का एक आतंक-सा अनुभव किया। आचार-व्यवहार, बोलचाल सभी बातों में मैं स्वयं को स्थानभ्रष्ट और दबा हुआ अनुभव करता था।"[2] गुरुकुल का यह सातवर्षीय जीवन यशपाल जी के व्यक्तित्व निर्माण में और भविष्य को उजागर करने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गुरुकुल में यशपाल प्राय: बीमार ही रहा करते थे। इसी कारण उनकी माँ ने उन्हें सन् १९१७ में लाहौर के डी.ए.वी. स्कूल में दाखिल किया। यहाँ पर उन्होंने देशप्रेम की किताबे पढीं, जिसके कारण उनके मन में बचपन से ही राष्ट्रभावना जागृत हुई। माँ को फिरोजपुर छावनी की प्राइमरी आर्य कन्या पाठशाला में नौकरी मिलने के कारण यशपाल लाहौर छोड़कर फिर से छावनी आ गये। यही से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा दी, जिसमें वे जिले में अव्वल आ गये। स्कूल की आयु में ही यशपाल कुछ-कुछ लिखा करते थे। लिखने की आदत उन्हें बचपन से ही जुडी हुयी थी। लिखने के साथ-साथ वे क्रांतिकारी कार्यों में भी बडी तन्मयता के साथ हिस्सा लेने लगे। मेधावी छात्र के रूप में बचपन से ही यशपाल सर्वश्रुत रहे। बौद्धिकता, साहित्य और क्रांतिकारीता इन तीनों का त्रिवेणी संगम उनके बाल्यकाल में ही दिखाई देता है।

यशपाल फिरोजपुर के आर्य समाज मंदिर के कार्यों में दिलचस्पी लेने लगे थें। भजन, कीर्तन, अध्यापन आदि कार्यों के साथ-साथ रात्री की पाठशाला में हरिजनों के बच्चों को पढाने लगे। इसी पाठशाला में

प्रधानाध्यापक के स्थान पर आठ रुपये मासिक वेतन पर उनकी नियुक्ती हुयी। यशपाल के जीवन की यह पहली कमाई थी।

सन् १९२१ में चले असहयोग आंदोलन की धूम सारे देश में फैल चुकी थी। युवा वर्ग इस ओर बडे जोरों के साथ आकर्षित हुआ था। यशपाल भी पूरी तरह से इस आंदोलन में सक्रिय हुए। पुलिस और जनता में जगह-जगह झगडे होने लगीं। इस संघर्षात्मक परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिए अहिंसावादी म. गांधी ने असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। म. गांधी जी के इस निर्णय से युवा वर्ग असंतुष्ट रहा, उसमें यशपाल भी थे।

मैट्रिक में मिली भारी सफलता के कारण माँ चाहती थी कि, यशपाल कॉलेज की पढाई पूरी करे। क्यों कि, शिक्षा ही बेटे के भविष्य की आधारशिला हो सकती है, यह उनका दृढ विश्वास था। यशपाल की रुचि और लगाव तो दिन-ब-दिन क्रांतिकारियों की ओर बढ रहा था। ऐसी स्थिति में वे कॉलेज जाना नहीं चाहते थे। लेकिन यशपाल के लिए माँ ही सर्वोपरि थी। उसकी इच्छा के अनुसार उन्होंने सन् १९२२ में नेशनल कॉलेज में अपना नाम दाखिल किया। यहीं पर उनकी मुलाकात प्रसिध्द क्रांतिकारी युवा नेता भगतसिंह और सुखदेव से हो गयी। इन के प्रभाव के कारण देश के लिए समर्पण करने की प्रतिज्ञा यशपाल ने अपने कॉलेज जीवन में ही की। इन्ही दिनों प्रो. जयचन्द्र जी विद्यालंकार से क्रांति की और उदयशंकर भट्ट से साहित्य की प्रेरणा उन्हे बराबर मिलती रही। बंदूक और कलम को उन्होंने एक साथ अपनाया। सन् १९२५ में उन्होंने नेशनल कॉलेज से बी.ए. और पंजाब युनिवर्सिटी से 'प्रभाकर' की परीक्षा पास की। इसप्रकार अपने समकालीन साहित्यकारों में यशपाल की शिक्षा का स्तर काफी उँचा कहा जा सकता है।

भगतसिंह और सुखदेव पढाई छोड कर क्रांतिकारी दल का गुप्त कार्य करने के लिए फरार हो गये और यशपाल बी.ए. होने के बाद वही अध्यापक होकर दल कार्य सम्हालते रहे ।

सन् १९२९ के दिसंबर में साइमन कमिशन का बायकाट करते समय लाला लाजपतराय पर लाठी से प्रहार करनेवाले सार्जेण्ट साण्डर्स को गोली मार दी गयी और मार्च १९२९ में दिल्ली असेम्बली में भगतसिंह ने बम फेंका । इसी साल लाहौर में एक बम फैक्टरी का पुलिस को पता लगा । २३ दिसंबर १९२९ के दिन यशपाल ने वायसराय की गाडी के नीचे बम विस्फोट किया ।

चंद्रशेखर आझाद के शहीद हो जाने पर वे हिंदुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र के कमाण्डर नियुक्त हुए । इसी समय दिल्ली और लाहौर में षडयंत्र के मुकदमे चलाये गए । यशपाल इन मुकदमों के प्रधान अभियुक्तों में थे । इन सब घटनाओं के कारण यशपाल लाहौर से फरार हो गए ।

विवाह -

यशपाल के विवाह की कथा भी अपना स्वतंत्र ऐतिहासिक महत्व रखती है । सन् १९३२ की फरवरी में पुलिस ने यशपाल को इलाहाबाद में पकड लिया । पुलिस पर गोली चलाना, बिना लायसेन्स हथियार रखना आदि आरोप पर उन्हें अदालत ने १४ साल की सजा सुनायी । अपने जेल जीवन में भी वे अविरत संघर्ष करते रहे और अपने हकों के लिए लडते रहे ।

अपने क्रांतिकारी जीवन में यशपाल का परिचय प्रकाशवती नामक क्रांतिकारी महिला के साथ हुआ। एक साथ काम करते-करते दोनों एक दुसरे की ओर सहज भाव से आकर्षित हुए। इसी आकर्षण के कारण क्रांतिकारी दिल में हंगामा मच गया। प्रकाशवती का पूरा परिवार पूराने विचारों का कट्टर समर्थक था। लेकिन प्रकाशवती के विचार अलग होने के कारण वह इन क्रांतिकारियों में शरीफ हो गयी थी। परिणामत: प्रकाशवती को घर छोडना पडा। ऐसे ही समय यशपाल को जेल हो गयी और प्रकाशवती अकेली पड गयी। लेकिन यह अकेली महिला साहसी थी। यशपाल के प्रति उसकी निष्ठा अनन्य थी। और इसी कारण उसने यशपाल के साथ विवाह का इरादा और भी पक्का किया। बरेली के डिस्ट्रिक्ट मॅजिस्ट्रेट की अदालत में उसने कैदी यशपाल के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। मॅजिस्ट्रेट इन्कार नहीं कर सके और ७ अगस्त १९३६ को बरेली जेल में उनका विवाह संपन्न हुआ। इस विवाह ने जेल में एक इतिहास निर्माण किया। इतना ही नहीं सरकार को जेल मैन्युअल में नयी धारा जोडनी पडी। इस शादी से बरेली जेल के एक अधिकारी मेजर मल्होत्रा बहुत भावुक हुए और उन्होंने यशपाल से कहा, ' इस लडकी का त्याग देखो। त्याग और धर्म की ऐसी भावना हिंदू नारी के अतिरिक्त संसार में कही संभव नहीं है। मैं मानता हूँ कि तुम भी असाधारण देशभक्त और वीर आदमी हो। तुमने अपना जीवन देश के लिए बलिदान किया है। .... पर मैं सोचता हूँ इस लडकी को तुमसे शादी करने से मिलेगा क्या ? उसका तो यह असाधारण त्याग आदर्श है।'[3]

सन् १९३७ की जुलाई में देश के ग्यारह प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली थी । जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में सत्ता आते ही उन्होंने जेल में बंद राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया । पर यशपाल को रिहा करने के लिए सरकार तैयार नहीं थी । क्यों कि, वे खतरनाक क्रांतिकारी थे । जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट भंडारी के पास यू.पी. गर्वनर ने एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था - "He is a violent and dangerous person and should not be released." (वह बहुत उग्र और खतरनाक व्यक्ति है और उसे रिहा न किया जाये।) ऐसे समय रफी अहमद किदवई के विशेष प्रयास से २ मार्च १९३८ को यशपाल को रिहा कर दिया गया ।

जेल से रिहा होते ही यशपाल से किसी पत्रकार ने प्रश्न किया, ' बदलती हुयी परिस्थितियों में क्या लक्ष्य और क्या व्यवहार होगा ?' यशपाल ने तुरंत जबाब दिया, - ' जो काम पहले बुलेट (शस्त्र) से करने का इरादा था, उसे अब बुलेटिन (साहित्य) से करूंगा । '[४]

इस परिवर्तन का यह भी कारण हो सकता है कि जेल में यशपाल का जीवन पठन-पाठन में व्यतीत होता था । बंगला, फ्रेंच, रूसी और इटैलियन भाषाओं का इन्होंने खूब अध्ययन किया । कहानियाँ लिखकर समय का उपयोग किया । इनके प्रारंभिक संग्रहों में प्रकाशित कई कहानियाँ लगभग जेल यात्रा के समय की ही है ।

जेल से रिहा होने के बाद भी यशपाल के पंजाब प्रवेश पर प्रतिबंध बराबर रहा । तभी यशपाल ने लखनऊ के एक साप्ताहिक पत्र में ७५ रु. मासिक तनखाह पर उप-संपादक की नौकरी करना शुरू किया । लेकिन वहाँ वे ज्यादा दिन नहीं रह सके । इसी कारण उन्होंने अपना

स्वतंत्र अखबार निकालने का विचार किया और माँ की तीन सौ रुपये की विरासत लेकर अपने ` विप्लव ` पत्र का प्रकाशन किया। ` विप्लव ` अपने ढंग का अकेला पत्र था, इसी कारण थोडे ही दिनों में उसकी माँग बढने लगी। १९३८ के अंत में आते-आते विप्लव इतना जनप्रिय हो गया कि इसका। एक उर्दू संस्करण ` बागी ` के नाम से भी निकलने लगा। अस्सी पृष्ठों के ` विप्लव ` में प्राय: सारी सामग्री यशपाल को ही लिखकर तैयार करनी पडती थी।

` विप्लव ` के प्रकाशन में और प्रचार में यशपाल की पत्नी प्रकाशवती का पूरा सक्रिय सहयोग था। लेकिन १९४० में अंग्रेज सरकार ने यशपाल को फिर से गिरफ्तार कर लिया। १९४१ में ` विप्लव ` और ` बागी ` से १२ हजार की जमानत माँगी गयी। यशपाल मुकदमे से रिहा होकर लौटे तो दाल-रोटी की समस्या मुँह खोलकर सामने खडी थी। ` विप्लव ` का काफी रुपया, जो एजन्टों पर बकाया था, सारा का सारा डूब गया। प्रकाशवती ने दाँतों की डाक्टरी सीखी थी। प्रॅक्टिस शुरू कर दी। लेकिन परिस्थिति वश उन्हें अपना डाक्टरी का सामान भी बेचना पडा। इन सब मुसीबतों के बाद भी यशपाल की कलम रुकी नहीं। जो कुछ भी बचाते पुस्तकों के प्रकाशन में खर्च करते। सन् १९३८ में यशपाल की कहानियों का पहला संग्रह ` पिंजरे की उडान ` प्रकाशित हुआ और जुलाई १९४० में समस्या-मूलक लेखों का संग्रह ` न्याय का संघर्ष ` प्रकाशित हुआ। इस तरह सन् १९५५ तक लगभग २० किताबों का प्रकाशन हुआ।

सन् १९५२ में पहली बार यशपाल विदेशयात्रा पर गये। रूस, स्विजरलैण्ड, आस्ट्रिया और इंग्लैंड की यात्रा की। इसी यात्रा पर आधारित ` लोहे की दीवार ` के दोनों ओर ` पुस्तका का प्रकाशन

हुआ । जून १९६६ में यशपाल दूसरी बार काबुल होकर रूस गये । उस समय उनके साथ उनकी पत्नी प्रकाशवती भी थी । इसके बाद ` अमिता ` उपन्यास प्रकाशित हुआ । ` झूठा सच ` उपन्यास ` धर्मयुग ` में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ और बाद में दो भागों में छपा । इस उपन्यास को विश्व साहित्य के पांच बडे उपन्यासों में गिना गया है । साथ ही उत्तर प्रदेश तथा पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत भी हुआ है । यशपाल की रचनाओं के अनुवाद मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु, मलयालम, बंगला, सिंधी, उर्दू, रूसी, फ्रेंच, चेक, जर्मन, अंग्रेजी तथा बर्मीज भाषाओं में हुए ।

यशपाल के व्यक्तित्व के विविध पहलू -

यशपाल साहित्यकार पहले थे क्रांतिकारी बाद में । अपने यौवनकाल में वे क्रांति की ओर अवश्य आकर्षित हुए । लेकिन बाद में उन्होंने बुलेट की अपेक्षा बुलेटिन की ओर ज्यादा ध्यान दिया और अपने क्रांतिकारी विचारों को साहित्य के विविध माध्यमों से प्रकट किया । बचपन से ही लेखन, वाचन एवं चिंतन-मनन की ओर इनकी रूचि थी । इसका प्रमाण ` सिंहावलोकन ` से प्राप्त होता है ।

अपने जीवन के पचास साल की लंबी अवधि में यशपाल ने उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, निबंध-यात्रा विवरण आदि साहित्य की विविध विधाओं में सहजता से अपनी लेखनी चलायी ।

क्रांतिकारी यशपाल -

बचपन से ही यशपाल के जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग आये जिसके कारण उनके मन में अंग्रेज शासन के विरूध्द घृणा और प्रतिहिंसा की

भावना जाग उठी । सन् १९२१ के असहयोग आंदोलन के कारण सारे देश में अंग्रेजों के विरूद्ध वातावरण तैयार हो रहा था । यशपाल ने अपनी मैट्रिक की पढाई के साथ-साथ राजनीतिक पढाई भी इन्ही दिनों शुरू की । सन् १९२२ में चौरीचोरा में जनता और पुलिस के बीच भयानक संघर्ष हुआ । इसके परिणाम स्वरूप म. गांधीने हिंसा से बचने के लिए अपने असहयोग आंदोलन को वापस लिया । लेकिन इसका युवा वर्ग पर विपरित परिणाम हुआ । सब निराश और बेचैन हुए । आगे कॉलेज जीवन में यशपाल की मुलाकात भगतसिंह और सुखदेव से हुयी । इनके कारण यशपाल क्रांति की ओर आकर्षित हुए ।

सैण्डर्सवध -

सन् १९२८ में भारत में `साइमन कमीशन` आया । इस कमीशन के विरोध में कौंग्रेस ने असहयोग आंदोलन छेड दिया था । जगह-जगह पर कमीशन के विरोध में हडताल और विराट प्रदर्शन किया जाता था । लाहौर में कमीशन के विरोध में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के नेतृत्व में व्यापक प्रदर्शन किया गया । इसी समय अंग्रेज पुलिस सुपरिटेंडेंट के हुक्म के अनुसार डी.एस.पी. सैण्डर्स ने लाठी चार्ज किया, जिसमें लाला लाजपतराय की मृत्यु हुयी । लाला की मृत्यु के कारण युवा वर्ग क्षुब्ध हो गया । उनमें बदले की भावना जाग उठी । अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार लाहौर में ही डी.ए.वी. कॉलेज के सामने पुलिस दफ्तर के बाहर भगतसिंह और राजगुरू ने सैण्डर्स को अपनी गोली का निशाना बनाया । पूर्व नियोजित योजना के अनुसार यशपाल ने फरार क्रांतिकारियों के लिए पैसे जुटाने की जिम्मेदारी सम्हाली । और अपने साथियों को आर्थिक सुरक्षितता प्रदान की ।

<u>बैंक की डकैती</u> -

सैण्डर्स वध में सफलता मिलने के पश्चात् यशपाल ने लाहौर बैंक में डकैती की योजना में भी सक्रिय सहयोग दिया । वे दस रुपये का नोट तुड़ाने के बहाने बैंक गये और वहाँ की स्थिति का अंदाज लिया । यशपाल के मत के अनुसार बैंक में डकैती करना आसान नहीं था, लेकिन फिर भी दल ने प्रयास करने की चेष्टा की जिसमें वे असफल रहे । यशपाल का अनुमान सही निकला ।

<u>विधानसभा में बमकाण्ड</u> -

हिंदुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना ने विधानसभा में बम विस्फोट की साहसी योजना बनायी । ८ अप्रैल १९२९ को भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने विधानसभा में बम विस्फोट करके समूची विदेशी सरकार की जड़ों को हिला दिया । केवल बम फैंककर वे भागना नहीं चाहते थे । बल्कि हाईकोर्ट में अपने उद्देश्य तथा क्रांति की व्याख्या करना चाहते थे । इसीलिए भाग जाने की काफी गुंजाइश होते हुए भी उन दोनों ने अपने आप को पुलिस के सामने समर्पित किया ।

<u>लाहौर की बम फैक्टरी</u> -

भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त के आत्मसमर्पण के बाद इस क्रांति कार्य को जारी रखने के लिए लाहौर में एक बम फैक्टरी का निर्माण किया गया । इसमें जयगोपाल, किशोरीलाल, भगवतीचरण बोहरा, तथा यशपाल आदि सब साथी बम का मसाला बनाने का काम करते थें । कुछ समय बाद खुफिया पुलिस को संदेह होने के कारण उन्होंने इस जगह पर

छापा मार कर उपस्थित सब व्यक्तियों को पकड लिया । यशपाल उस समय मकान में नहीं थे । ऐसी स्थिति में उनके सामने फरार होने के सिवा और कोई उपाय ही नहीं था । अत: इस घटना के साथ यशपाल का फरारी का जीवन आरंभ हो गया ।

सरहनपुर बम फैक्टरी -

लाहौर की बम फैक्टरी पर पुलिस का कब्जा हुआ और सुखदेव गिरफ्तार हुए । इसी कारण फरारी की अवस्था में यशपाल ने अपने साथियों के साथ नयी-नयी क्रांतिकारी योजनाएँ साकार करने का सफल प्रयास किया । बम निर्माण की हार्दिक इच्छा होने के कारण उन्होंने अन्य क्रांतिकारी सदस्यों के सहयोग से सरहनपुर बम फैक्टरी का निर्माण किया । लेकिन दुर्भाग्य से इस फैक्टरी पर भी पुलिस ने छापा मारा और शिव वर्मा तथा जयदेव कपूर को पकड लिया ।

वाईसराय की स्पेशल ट्रेन के नीचे बम विस्फोट -

अत्यंत परिश्रम और कौशल के साथ बम निर्माण कर लेने के बाद यशपाल और उनके साथियों ने वाइसराय की गाडी उडाने की योजना बनायी पहले २४ अक्तूबर १९२९ यह दिन निश्चित किया था । लेकिन बाद मे २३ दिसंबर १९२९ को यह कार्य संपन्न हुआ । इस दुर्घटना से वायसराय बच गये लेकिन पूरे देश में इस घटना ने तहलका मचा दिया ।

वाईसराय की गाडी उडा देने के बाद यशपाल फरार रहे । इन्हीं दिनों उन्होंने ` बम का दर्शन ` लिखा, जिसमें गांधी द्वारा क्रांतिकारी संगठन पर किए गए तथाकथित आरोपों का खंडन किया और

बम की आवश्यकता पर जोर दिया। आगे चलकर दुर्भाग्य से दल में मतभेद बढ़ते गए। इसीके परिणाम स्वरूप यशपाल गिरफ्तार हुए। अगर दगाबाजी न होती तो यशपाल को पकड़ना अंग्रेजों के बस की बात न थी।

इस क्रांति के पीछे यशपाल का एक निश्चित विचार-दर्शन था। उनके क्रांति-कार्य की श्रेष्ठता इसी बात से जाहिर होती है कि, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु तथा भूपेंद्रनाथ की गिरफ्तारी और चंद्रशेखर आझाद के फरार हो जाने के बाद भी उन्होंने हिंदुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना का कार्यभार सम्हाला। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का परिचय जगह-जगह दिया। आगे चलकर अपनी लेखनी से क्रांति की ज्वाला को हमेशा धधकते हुए रखा।

साहित्यकार यशपाल -

" यशपाल उन साहित्यकारों में से है जो कलम और तलवार चलाने में समान सफलता प्राप्त कर चुके हैं। क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित होने पर भी उनकी कलम कभी नहीं रुकी। एक ओर पिस्तौल चलाना और दूसरी ओर कलम की गति, दोनों साथ-साथ चलते रहें। "[5]

यशपाल का साहित्यकार उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व पर हावी हो गया। वे पहले साहित्यकार थे और बाद में और कुछ। यशपाल का रचना संचार बहुत विपुल और व्यापक है। हिंदी में उनसे पहले प्रेमचंद को छोड़कर किसी भी दूसरे लेखक ने इतने बड़े रचना संचार की सृष्टि नहीं की थी। अलग-अलग स्थितियों और वर्गों का धर्म और सम्प्रदायों का विशाल कॅनवास उन्होंने अपनाया है।

यशपाल की कई रचनाओं की अँग्रेजी अनुवादिका और उनकी अमरीकी शोध-छात्रा कोरिन फ्रैंड इन्हीं सारी विशेषताओं के कारण से यशपाल को प्रेमचंद की परंपरा का उत्तराधिकारी घोषित करती हुयी लिखती है - ` साधारण जनता के प्रति अपनी संलग्नता, सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबध्दता, मानव व्यवहार की विचित्रताओं की अपनी समझ और गहरी सहानुभूति तथा संवेदना के साथ मानव जीवन के अंकन, अपनी सादा और पुरअसर लेखन-शैली की दृष्टि से हिंदी में यशपाल प्रेमचंद के उत्तराधिकारी ठहरते हैं।`[६]

यशपाल का साहित्यिक व्यक्तित्व काफी परिष्कृत है। वह जनसाधारण का प्रतिनिधित्व करता है। इसका कारण है वे साहित्य और समाज के अटूट संबंधों को मानते थें।

उपन्यासकार यशपाल -

सन् १९४१ से लेकर सन् १९७४ तक के तैंतीस वर्षों के काल में यशपाल ने ग्यारह उपन्यासों का सृजन किया। इनमें प्रमुख रूपसे राजनीतिक, सामाजिक, प्रेम और विवाह तथा ऐतिहासिक विषयों पर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी। ` दादा कॉमरेड,`` देशद्रोही,`` पार्टी कॉमरेड,`` मनुष्य के रूप,`` झूठा सच,` तथा ` मेरी तेरी उसकी बात ` आदि उपन्यासों में उन्होंने विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों का चित्रण किया। ` मनुष्य के रूप,`` झूठा-सच,`` मेरी तेरी उसकी बात ` में मध्यवर्ग का पारिवारिक जीवन, उनकी आर्थिक समस्याएँ, समाज के रीति-रिवाज, अंधश्रध्दा, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, जातीयता, नारी की दयनीयता आदि का वर्णन है। प्रेम, विवाह और यौन संबंधों के पारंपरिक दृष्टिकोणों पर प्रहार करने के लिए यशपाल ने ` दादा

कामरेड,`` मनुष्य के रूप,`` बारह घंटे,`` क्यों फँसे ? ` आदि उपन्यासों का निर्माण किया । ` दिव्या ` तथा ` अमिता ` इन दो उपन्यासों के जरिए ऐतिहासिक विषयों का प्रतिपादन किया है । ` दिव्या ` में मौर्य साम्राज्य के ह्रास के बाद के सामाजिक पतन का सजीव चित्रण है तो ` अमिता ` में मगध सम्राट अशोक की कलिंग विजय की विस्तार के साथ चर्चा करते हुए अमिता द्वारा सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन दिखाया है । अत: हम संक्षेप में कह सकते हैं कि, यशपाल की उपन्यास कला का केंद्रीय विषय है, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मनुष्य की मुक्ति । इसी आधारभूत समस्या को उन्होंने अपने ऐतिहासिक और आधुनिक जीवन से संबंधित उपन्यासों में उठाया है ।

<u>कहानीकार यशपाल</u> -

प्रेमचंदोत्तर कहानी-यात्रा में यथार्थ बोध या कहे कि वस्तुज्ञान का परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करनेवाले कहानीकारों में यशपाल का नाम अन्यतम है । एक विशिष्ट विचारधारा के प्रति प्रतिबध्द होकर कहानी सृजन करनेवालों की पंक्ति में यशपाल का नाम पहले आता है । उन्होंने अपनी कहानियों में घटनात्मक रोचकता से नैतिक समझ की दिशा में पद प्रक्षेपकर मध्य-वर्गीय समस्याओं के निरूपण हेतु आर्थिक या मनोवैज्ञानिक या सांस्कृतिक आधारों का चयन किया । अपनी वैचारिक प्रबुध्दता से प्रेरित होकर लगभग चालीस वर्षों तक कहानियाँ लिखते रहें । यशपाल की कुल १६ संग्रहों में १०० कहानियाँ प्रकाशित हुयी हैं । समय-समय पर प्रकाशित और असंग्रहित कहानियों को मिलाकर वे २२५ से अधिक होती हैं ।

यशपाल की कहानी कला का उद्देश्य कभी व्यक्ति के परिष्कार में, समाज केसुधार में, तो कभी जीवन को नया रूप देने में लक्षित होता है। मध्यवर्गीय समाज के एक सदस्य होने के नाते वे इस समाज में नारी को ही अधिक शोषित, पीडित और असहाय पाते हैं। उनकी कला का स्पष्ट उद्देश्य उपयोगितावादी है। वे निष्प्रयोजन कला में आस्था नहीं रखते। अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए कहानी को माध्यम बनाते हैं।

<u>नाटककार यशपाल</u> -

नाटककार के रूप में भी हम यशपाल का परिचय पाते हैं। उनके तीन एकांकी ' नशे-नशे की बात ' में संग्रहीत हैं। इसे यशपाल ने दृश्यात्मक कहानियों के रूप में ही लिखा है। इसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए ' दो शब्द ' में वे कहते हैं, - ' यह तीन दृश्य कहानियाँ इस ढंग से लिखी गयी हैं, कि पढने में कहानी का प्रयोजन पूरा कर सके और रुचि अथवा अवसर होने पर रंगमंच पर भी उतारी जा सके। '७

' नशे-नशे की बात ' लेखक के प्रगतिशील दृष्टिकोण की उपज है। संसार की माया और परिवार के उत्तरदायित्व से भागनेवाले ज्ञानी के स्वार्थी और कमीनेपन का भंडा फोड दिया है। ' रूप की परख ' इस सामाजिक एकांकी में नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया है। प्रेम और यौन संबंधों के व्यक्तिगत और सामाजिक अविष्कार जैसे गंभीर विचार को लेकर यशपाल ने दर्शन चिंतन की दृष्टि से ' गुडबाय-दर्दे दिल ' प्रस्तुत किया है। ' नशे-नशे की बात ' संग्रह के सभी एकांकी यशपाल के प्रगतिशील विचारों के वाहक हैं। इनमें रूढि, परंपरा के विद्रोह की भावना प्रधान है। डॉ. वेदपाल खन्ना का मत है,

" यशपाल जी ने केवल कला कला के लिए अथवा मनोरंजन के विचार से नाटकों की रचना नहीं की, वरन् एक उद्देश्य विशेष से प्रेरित होकर ही इस क्षेत्र में प्रवेश किया। "[8]

इस कथन से उनके नाटकों की सप्रयोजना स्पष्ट होती है।

मुसाफिर यशपाल -

यशपाल हिंदी के जनवादी कथाकार है। उन्होंने वैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार संघर्षपूर्ण जीवन जीने और लिखने की कोशिश की है। जहाँ तक यात्राओं का संबंध है उन्होंने सात बार देश-विदेश की यात्रा की है और देश के भीतर का कोई कोना अनदेखा नहीं छोडा। यशपाल ने इंग्लैंड, स्विजरलैण्ड, रूस, इटली, चेकस्लोवाकिया, रूमानिया, पूर्वी-पश्चिम जर्मनी और अफगानिस्तान की यात्राएँ की। इन यात्राओं का वर्णन " लोहे की दीवार के दोनों ओर," " राहबीती," " बीबीजी कहती है," " मेरा चेहरा रोबीला है " में है। मारिशस यात्रा की चर्चा " स्वर्गोंद्यान बिना साँप " में है। देश की यात्राओं का भी कथ्य बीच-बीच इन पुस्तकों में है। " देखा सोचा समझा " में विशेष रूप से सेवाग्राम, शिमला से कुल्लू-नैनीताल के यात्रानुभव है। इन यात्राओं से दुनिया के दोनों प्रकार के देशों और जनजीवन की संरचना का बोध होता है।

यशपाल का यात्रा साहित्य एक संघर्ष है। मार्क्सवादी दृष्टि की व्यावहारिकता को उन्होंने दुनिया के नक्शे में परखा है। उनकी एक-एक यात्रा से पूंजीवादी व्यवस्था और साम्यवादी संस्कृति का अंतर स्पष्ट हुआ है। इसमें पूंजीवादी समाज में बिखरे अनेक प्रश्नों का

उत्तर दिया गया है। यशपाल का यात्रा साहित्य सिर्फ यात्रा विवरण नहीं है। उन्होंने इसके द्वारा समाज और राजनीति के विविध रूपों प्रसंगों पर अपने मौलिक विचार प्रकट करके उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

निबंधकार यशपाल -

यशपाल ने उपन्यास और कहानी के साथ-साथ निबंध के माध्यम से भी सीधे तौर पर अपने विचार लोगों तक पहुँचाए हैं। उनके अधिकतर निबंध विचारात्मक है। इन निबंधों में केवल भारतीय ही नहीं बल्कि पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का भी उद्घाटन किया है। उनके निबंधों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सभी समस्याओं की नयी व्याख्या, समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

यशपाल के निबंध साहित्य को उनकी रचनाओं के आधार पर डा. सुनिलकुमार लवटे ने तीन भागों में विभाजित किया है।[१]
१) राजनीतिक निबंध - गांधीवाद, मार्क्सवाद, रामराज्य, स्वातंत्र्य, क्रांति, जेल, सत्याग्रह, हडताल ऐसे राजनीति से संबंधित विषयों को लेकर तथा राजनीतिक विवेचना, खंडन-मंडन आदि उद्देश्यों से जिन निबंधों की रचना की गयी है वे इस श्रेणी में आ जा जाते हैं। २) हास्य निबंध - ` चक्कर क्लब,`` बात-बात में ` इन रचनाओं में यशपाल ने हास्य-व्यंग्य के सहारे कथात्मक विवेचना के क्रम में विभिन्न महत्वपूर्ण समस्याओं की विवेचना की है। ३) कथात्मक निबंध - इन निबंधों का स्वरूप संस्मरणात्मक है। सेवाग्राम, ताश्कंद, शिमला, नैनीताल आदि स्थानों के संस्मरणों के साथ कई समस्यामूलक कथाबीजों के माध्यम से यशपाल ने अपने दर्शन को प्रकट किया है।

हिंदी साहित्य की श्री-वृध्दि में निबंधकार यशपाल का योगदान महत्वपूर्ण माना जा सकता है ।

अनुवादक यशपाल -

साहित्य की विभिन्न विधाओं की तरह अनुवाद के क्षेत्र में भी यशपाल ने अपना स्वतंत्र परिचय दिया है । मूल कृतियों के सौंदर्य को अपने मौलिक रूप में अनुवाद में प्रकट कर यशपाल ने अपनी कलम की क्षमता का परिचय दिया है । पक्का कदम, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, जनानी डयोढी, फसल, चलनी में अमृत, जुलेखा आदि उनके अनुवादित उपन्यास हैं ।

संपादक-पत्रकार यशपाल -

यशपाल एक निर्भीक पत्रकार थे । अपनी बात को निर्भिकता के साथ प्रस्तुत करने की उनकी शैली से उनकी वैचारिक दृढता ही सिध्द होती है । तत्कालीन सभी आंदोलनों के संदर्भ में जनमत प्रकट कर उन्होंने ` विप्लव ` को समाजाभिमुख बनाया । अपने विभिन्न स्तंभों के माध्यम से देश और समाज का चित्र अंकित कर उन्होंने ` विप्लव ` को समाज का दर्पण बना दिया था । हिंदी पत्रकारिता जगत् में यशपाल की पत्रकारिता अपने जीवट और साहस के कारण निरंतर पथप्रदर्शक ही सिध्द होगी । यशपाल के पत्रकार, स्तंभलेखक, संपादक आदि रूपों ने उनके व्यक्तित्व को उजागर किया है । ` विप्लव ` को संपादक यशपाल ने इस देश में एक व्यापक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रांति के अग्रदूत के रूप में निकाला, जो बिना किसी पक्षपात के राष्ट्रहित के उद्देश्य से पेश किये गये सिध्दांतों और कार्यक्रमों की समीक्षा और विवेचना के लिए खुला था ।

` विप्लव ` के साथ-साथ यशपाल अन्य अनुकूल पत्र-पत्रिकाओं में अपने विचारों को प्रकट करते थे । जनयुग, नई कहानियाँ, धर्मयुग, कादम्बिनी, उत्कर्ष आदि पत्रिकाओं में वे नियमित रूप से स्तंभ लेखन करते रहे । यह निर्विवाद सत्य है कि यद्यपि ` विप्लव ` के निकालने का मूल उद्देश्य राजनीतिक चेतना जागृत करना था और मार्क्सवाद के प्रचार में उसने ऐतिहासिक कार्य किया है, क्रांति की प्रवृत्ति और भूमिका तैयार करना ही उसका मुख्य ध्येय था, एक संपादक के रूप में यशपाल ने एक सदाजागृत, तर्कशील पदाधर पत्रकार की भूमिका बड़ी सफलता से अदा की है और उनके पत्रकार की भूमिका को झुठलाना अक्षम्य अपराध होगा ।

<u>सिंहावलोकन और यशपाल</u> -

` सिंहावलोकन ` आत्मकथा या आपबीती नहीं है । यह संस्मरणों का लेखाजोखा है । जिसके द्वारा लेखक ने हिंदुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना का आद्योपान्त इतिहास ही प्रस्तुत किया है । सशस्त्र क्रांति की चेष्टाओं को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करना इसका उद्देश्य है । इसमें वर्णित घटनाएँ पूर्णत: ऐतिहासिक है । संपूर्ण संस्मरण तीन खंडो में विभाजित होने के साथ-साथ आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है ।

<u>निष्कर्ष</u> -

यशपाल का प्रारंभिक जीवन कार्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी रहा तो परवर्ती जीवन विचार के क्षेत्र में । वे सशस्त्र क्रांति के सिपाही थे और साहित्यिक जीवन में सुव्यवस्थित होने के पहले वे सब कुछ झेल चुके थे जो जन साधारण में किसी को भी जननायक के रूप में प्रतिष्ठित करता है ।

साहित्यकार की हैसियत से झूठ से ठगा जानेवाला, राजनीतिक फरेब से फुसलाया जानेवाला समाज ही उनकी चिंता का मुख्य विषय था। वे एक अत्यंत लोकप्रिय लेखक रहे और उनकी कृतियों ने असंख्य पाठकों, छात्रों और अध्यापकों को साहित्य में दीक्षित किया है।